International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 09
August 2017

कबीर की रहस्य साधना

श्रीमती मनीषा
हिन्दी विभाग
सहायक प्रवक्ता
छोटू राम आर्य महाविद्यालय,
सोनीपत–131001

शोध आलेख सारः–

संत कवि कबीर हिन्दी साहित्य के महान रहस्यवादो कवि स्वीकार किए जाते है। उनका रहस्यवाद उस ब्रह्म की जिज्ञासा का ही परिणाम है। महात्मा कबीर साहब के काव्य में साधनात्मक एवं भावनात्मक दोनों प्रकार का रहस्य विद्यमान है। साधनात्मक रहस्यवाद में साधक अज्ञात या अकथ्य को जानने का प्रयास करता है। यह भारतीय साहित्य में बहुत प्राचीन शैली है। उपनिषदों में 'तत्वमसि' (वहो तु है) 'सोडहं' (मैं वही हूँ), 'अहम् ब्रह्मस्मि' (मैं ब्रह्म हूँ) आदि रहस्यवादी सिद्धान्त वाक्य उपनिषदों में पाए जाते है। कबीर जी ने कहा भी है–

जल में कुम्भ–कुम्भ में जल है भीतर बाहर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलहि समाना, यह तत् कहा ग्यानी।।

रहस्यवाद का शब्दार्थ तो रहस्य सम्बन्धी सिद्वान्त है।

आचार्य शुक्ल ने रहस्यवाद की परिभाषा देते हुए क्या है–

''चिन्तन के क्षेत्र में जो अद्धैतवाद है, भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद।''

रहस्यवाद के लिए द्वैत की स्थिति आवश्यक है। जिस प्रकार भक्ति के लिए साकार होने पर वह रूपरेखा वाला रहस्य नहीं रहेगा। अतः कहा जा सकता है कि जहाँ अद्धैतवाद का आरम्भ है वही रहस्यवाद का अन्त है। मानव ने सृष्टि के आदि से जब तक जिस वस्तु की आकांक्षा की है, वह उसे प्राप्त करके रहा है।

कहा भी है– ''पाना अलभ्य हो जग की यह कैसी अमिलाषा है, ब्रह्म अप्राप्य इसी से सब करते उसकी आशा। इसी अप्राप्य ब्रह्म को प्राप्त करने के लिए मानव âद्य और मन आदि काल से दर्शन, काव्य, विज्ञान आदि के माध्यम से निरन्तर जो प्रयत्म करता आया है, ये सब रहस्यवाद है के अन्तर्गत आता है।

कठिन शब्द– बिछलानी, धीवर, पुड, अवधु।

सारः— महात्मा कबीर के जन्म स्थान व समय को लेकर कई मत प्रचालित है। हाँ इतना अवश्य है कि वे सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। नाभादास के भक्तमाल और बील हण्टर, मेकालिफास्मिथ तथा भण्डारकर आदि के इतिहास ग्रन्थों से उक्त तथ्य की पुष्टि हो जाती है। सन्त पीपा ने कबीर का नामोल्लेख किया है। इससे स्पष्ट है कि सन्त कबीर पीपा से पहले थे। पीपा का जन्म सं0 1482 में हुआ। कबीर चरित्र बोध में 1455 विक्रांति ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा सोमवार के कबीर की जन्म तिथि स्वीकार की गई है। जिसका आधार निम्न बोध है।

"चौदह सौ पचपन साल गए चन्द्रवार एक ठाठ गए।

जेठ सुदी बरसायत को पूरनमासी तिथि प्रगट भए।

घन गरजे दामिनी दमके बूंदे बरसे झर लाग गए।

लहर तालाब कमल खिले तहँ कबीर भानु परकास भये।"

कबीर के जन्म स्थान को लेकर भी कई मत प्रचालित है—

मगहर गुरू ग्रन्थ साहिब के एक पद में इनका जन्म मगहर में बताया है।

"पहिले दरसनु मगहर पाइयो पुनि कासी बसे आई।

जैसा मगहर तैसी कासी हम एकै करि जानी।"

कुद विद्वान इनका जन्म स्थान काशी भी मानते है।

कबीर ने अपनी वाजियों में अपने को काशी का जुलाहा कहा है।

तू ब्राह्मण मैं कासी का जुलाहा चिन्ह न मोर मियना

"तै सब मागे भूपति राजा, मोरे राम धियाना।"

अनन्तदास ने 'कबीर परचयी' (सम्वत् 1657) में कबीर को 'काशी का जुलाहा' कहा है—

"काशी बसे जुलाहा एक हरि भगतिन की "पकरी टेक"

जन्म स्थान की तरह इनकी मृत्यु के सम्बन्ध में भी अलग—अलग मत भेद है। अधिकांश विद्वानों ने इनकी मृत्यु सम्वत् 1575 स्वीकार की है। कबीर के दीक्षा गुरू 'रामानन्द' माने जाते है। कबीर पढ़े—लिखें नहीं थे। उन्होंने स्वीकार किया है— "मसि कागद छुऔ नहीं, कलम गही नहि हाथ" जनश्रुतियों के अनुसार कबीर का विवाह 'लोई' नामक स्त्री से हुआ था तथा उनके पुत्र का नाम 'कमाल' व पुत्री का नाम 'कमाली' था। गुरू ग्रन्थ साहिब की एक साखी से कबीर के पुत्र का संकेत मिलता है।

बूढ़ा बंसु कबीर का उपाजियो पूड कमालु।

हरि का सिमरनु छाडि के धरि ले आया मानु।

कबीर का व्यक्तित्व अद्भुत है। डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में – "वे सिर से पैर तक मस्तमौला, स्वभाव के फक्कड़ आदत से अक्खड़, भक्ति के सामने निरीह, धूर्त भेष धारी के आगे प्रचण्ड, दिल से साफ, दिमाग से दुरूस्त, भीतर से कोमल, बाहर से कठार, जन्म से अस्पृश्य, कर्म से वन्दनीय थे। युगावतार की शक्ति और विश्वास लेकर व पैदा हुए थे। कबीर की रहस्य भावना का मूलाधार भो जिज्ञासा है। कबीर की विशेषता यह है कि वे निसंकोच होकर प्रश्न कर सकते है। सीधे प्रश्नों का उतर देना दुष्कर होता है, किन्तु सीधे प्रश्न कर पाना भी युग–द्रष्टा का ही काम होता है–

कहौ मईया अंबर कासौ' लागा।

कोई बूझे बूझनहार सभागा।।

अंबर मद्दे दीसै तारा।

कैन चतुर औसा चितरन हारा।।

कबीर दास जी रहस्य भावना का आधार जो जिज्ञासा है, वह गम्भीर रूप से यथार्थ के पर्यवेक्षण से उत्पन्न है। यदि सुनी–सुनाई बातों पर विश्वास हो जाता, तो सन्देह क्यों होता? और यदि सन्देह न होता तो कर्मकाण्ड, वर्णा–श्रम व्यवस्था आदि पर आघात क्यों करते? महात्मा कबीर साहब ने साधनात्मक रहस्यवाद की अपने काव्य में पूर्ण प्रतिष्ठा की है। उन्होंने रहस्यवाद में प्रतीकात्मक शब्दों का प्रयोग किया है– कुण्डालिनी, गंगा, जमुना, सरस्वती, षटचक्र आदि का पूर्णतः प्रयोग किया है। कबीर न अपनी आन्तरिक अभिव्यक्ति की अनुभूति व्यक्त करते हुए कहा है–

बोलो भाई राम की दुहाई।

इह रस सिव सनकादि माते पीवत अजहूँ न उघाई।

इला प्यंगला भाटी कीन्हीं, ब्रह्म अग्नि परजारी।

ससिहर सूर द्वार दस मूँदे लागी जोग जुग तारी।।

कबीर ने स्वयं मनोन्मनी अवस्था में रहकर भव की भट्टी में ज्ञान के गुड़ और ध्यान के महुए से इसी महारस को पिया था। गुरू प्रसाद से उन्हें ये रस मिल गया था। कबीर ने इसी रस का पान करने के लिए अवद्यु को ललकारा–

अवद्यु गगन मंडल धर कीजै।

अमृत झरै सदा सुख उपजै, बंक नालि रस पीजै

मूल बाँधि सर–गगन–समाना सुषमन यो तन लागी।

काम क्रोध दोउ भया पलीता तहाँ जोगणो जागी।

मनवाँ जाए दरीबै बैठा मगन भया रसि लागा।

कहै कबीर जिय संसा नाहीं सबद अनावृद बागा।।

माया सम्पूर्ण जीवों को भ्रमित रखती है। कबीर ने इसी को संकेत करके कहा है कि रघुनाथ की माया शिकार खेलने निकली है और साम्प्रदायिक जालों में फँसाकर मुनि, पीर, जोगी, जंगम, ब्राह्मज और संयासी को मार रही है। डा0 त्रिगुणायत ने रहस्यवाद के विषय में अपन विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि– ''जब साधक भावना के सहारे आध्यात्मिक सता की रहस्यमयी अनुभूतियों को वाणी के द्वारा शब्दमय चित्रों में सजाकर रखने लगता है, तभी साहित्य में रहस्यवाद की सृष्टि होती है।''

रहस्यवाद की सत्ता दर्शन और काव्य दोनों में रहती है। परन्तु रहस्यवाद शब्द केवल काव्यगत रहस्यवाद के लिए प्रयुक्त होता है। क्योंकि दर्शन का रहस्यवाद ज्ञान प्रधान होता है और काव्य का भाव प्रधान। काव्य में ज्ञान और भाव दोनों का समन्वय होत हुए भी भाव की प्रधानता रहती है। दर्शन में भाव के रहस्यवाद के मूल में सांसारिक अनित्यता की उदासीनता, माया की छलना में भय तथा ज्ञान–चिन्तन आदि प्रमुख तत्व होते हैं।

कबीर काव्य में भावनात्मक रहस्यवाद की अभिव्यक्ति माधुर्य से प्रेरित है। इसके अन्तर्गत उन्होंने अपनी आत्मा को पत्नी रूप में और परमात्मा को पति रूप में अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए कहा भी है–

''ए अंखियाँ अलसानी, पिया हो सेज चलो।

खंभ पकरि पतंग अख, डोलै बोलै मधुरी बानो।।

फूलन सेज बिछाई जो राखो पिया बिना कुम्हलानी।

धीरे पांव धरो पंलगा पर जागत ननद जिठानी।

कहत कबीर सुनो भई साधो लोक लाज बिछलानी।।

कबीर की साधना पद्धति का मूल मन्त्र है– 'आत्मचिन्तन'। उन्होंने रूपक द्वारा स्पष्ट किया है कि आत्मा ही मछली, धीवर, जाल, और काल सब रूपों में प्रकट है। इसी अभिव्यक्ति शैली से रहस्यात्मकता अंकुरित हुई। जिसके फलस्वरूप पहेली, रूपक और उलटवासी की रचना हुई। कबीर का रहस्यवाद नाथ सम्प्रदाय के हठ योग साधना से प्रभावित है। रामानन्द से प्रभावित कबीर ने ईश्वरवाद में भक्ति का पुट दिया और सूफी भावना से प्रभावित एवं स्वानुभूति होने के कारण ईश्वर विरह की तीव्र अनुभूति को आवश्यक बताया है। कबीर दर्शन में प्रेम की भूमिका का ज्ञान, योग और वैष्णव भक्ति का समन्वय मिलता है। कुण्डलिनीशक्ति का नाथ पन्थी हठयोग

साधना प्रक्रिया में सर्वोच्च महत्व है। इसकी व्याख्या में कहा गया है कि समष्टि रूप 'महाकुण्डालिनी शक्ति' सम्पूर्ण सृष्टि में परिव्याप्त है। यही शक्ति जीव में व्यष्टि की प्रधानता से कुण्डलिनी कहीं जाती है। इसके अतिरिक्त कबीर जी ने हठ योग साधना के अन्य बिंदुओं का भी वर्णन किया है। ''डा0 रामकुमार वर्मा'' ने कबीर के रहस्यवाद' के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है–

''कबीर की वाणी को अद्योपान्त पढ़ जाने पर ज्ञात हो जाता है कि वह सच्चे अर्थो में रहस्यवादी थे। यद्यपि कबीर निरक्षर थे, तथापि वह ज्ञान शून्य नहीं थे। उनके सत्संग, पर्यटन और अनुभव आदि ने उन्हें ऊपर उठा दिया था। वह एक साधारण व्यक्ति की श्रेणी से परे थे। रामानन्द का शिष्यत्व उनमें धार्मिक सिद्वान्तों का कारण था और जुलाह के घर पालित होना, सूफियों का सत्संग होना उनके मुसलमानी विचारों से परिचित होने का कारण था। इस व्यवहार ज्ञान से ओत–प्रोत होकर उन्होंने अपने धार्मिक सिद्वांतों का प्रतिपादन बड़ी कुशलता से किया और कुशलता भी ऐसी जिनमें कबीर के व्यक्तित्व की छाप लगी हुई है।''

हिन्दी में कबीर ने आध्यात्मिक भावना को सरस साहित्यिक रूप प्रदान कर 'रहस्यवाद' की नींव डाली'। आध्यात्मिक जैसे शुष्क विषय में माधुर्य भाव की उक्तियों से जो रस धारा प्रवाहित की और कवित्वपूर्ण ढंग से जो सुन्दर चित्र अंकित किए वे वास्तव में सराहनीय है। कबीरदास में हिन्दू–मुस्लिम दोनों संस्कृतियों के समन्वित रूप थे, जन्म से, संस्कार से और सिद्वान्त से भी। इसलिए उनके रहस्यवाद पर शंकराचार्य के अद्वतवाद और सूफीवाद दोनों का प्रभाव है। कबीर से पूर्व हिन्दी साहित्य में नाथ–पन्थियों, हठयोगियों, सूफियों और भारतीय दर्शन का प्रभाव था। कबीर ने इन सब का समन्वित रूप रहस्यवादी काव्य के रूप में प्रस्तुत किया जो हिन्दी साहित्य की अमर निधि बन गया।

संदर्भ

1. अरिहन्त पब्लिकेशन – करनैल सिंह
2. साहित्य सीरिज – डा0 अशोक तिवारी